**भारत सरकार**

**रेल मंत्रालय**

**राज्य सभा**

**अतारांकित प्रश्न सं. 943**

**22.12.2017 को दिया जाने वाला उत्तर**

**उत्‍कल एक्‍सप्रेस दुर्घटना**

**943. डा. प्रदीप कुमार बालमुचू:**

 **क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:**

1. क्‍या मंत्रालय ने हाल ही में उत्‍तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में हुए उत्‍कल रेल हादसे के कारणों का आकलन किया है, यदि हां, तो तत्‍संबंधी ब्‍यौरा क्‍या है;
2. की गई जांच का ब्‍यौरा क्‍या तथा चूक के क्‍या कारण हैं; और
3. क्‍या सरकार किसी भावी दुर्घटना से बचाव के लिए किन्‍हीं सुरक्षा उपायों पर विचार कर रही है, यदि हां, तो तत्‍संबंधी ब्‍यौरा क्‍या है?

**उत्तर**

**रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राजेन गोहांई)**

(क) से (ग) : एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

\*\*\*\*\*

उत्‍कल एक्‍सप्रेस दुर्घटना के संबंध में दिनांक 22.12.2017 को राज्‍य सभा में डा. प्रदीप कुमार बालमुचू द्वारा पूछे जाने वाले अतारांकित प्रश्‍न सं. 943 के भाग (क) से (ग) के उत्‍तर से संबंधित **विवरण.**

(क) और (ख) : जी हां। 19.08.2017 को उत्‍तर रेलवे के दिल्‍ली मंडल के दिल्‍ली सहारनपुर खंड के खतौली-मंसूरपुर स्‍टेशनों के बीच पटरी से उतरी गाड़ी सं 18477 (पुरी-हरिद्वार कलिंगा उत्‍कल एक्‍सप्रेस) की दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के उद्देश्‍य से नागर विमानन मंत्रालय के तहत रेल संरक्षा आयुक्‍त, उत्‍तर सर्किल, नई दिल्‍ली द्वारा की जाने वाली सांविधिक जांच के आदेश दिए गए हैं।

(ग) : भारतीय रेलों में संरक्षा को सर्वोच्च‍ प्राथमिकता दी जाती है और दुर्घटनाओं की रोकथाम और संरक्षा को बेहतर करने के लिए निरंतर आधार पर हरसंभव कदम उठाए जाते हैं। इनमें गतायु परिसंपत्तियों का समय पर बदलाव, रेलपथ, चल स्टॉंक, सिगनल और इंटरलॉकिंग प्रणालियों के रखरखाव और उन्नयन हेतु यथोचित प्रौद्योगिकियां अपनाना, संरक्षा अभियान चलाना, पदाधिकारियों के प्रशिक्षण पर अधिक जोर देना और निगरानी के लिए नियमित अंतराल पर निरीक्षण और संरक्षा पद्धतियों के अनुपालन हेतु कर्मचारियों को शिक्षित करना शामिल है। सुरक्षित गाड़ी परिचालन सुनिश्चित करने के लिए रेल परिसंपत्तियों का निरोधक और भावी अनुरक्षण किया जाता है। दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए संरक्षा उपकरणों/प्रणालियों में इलेक्‍ट्रोनिक इंटरलॉकिंग, संपूर्ण रेलपथ परिपथन, ब्लॉक प्रूविंग एक्सल काउंटर (बीपीएसी) की व्यवस्था, कलर लाइट एलईडी सिगनल, गाड़ी सुरक्षा चेतावनी प्रणाली (टीपीडब्यूएस), मोबाइल गाड़ी रेडियो संचार (एमटीआरसी), डेडीकेटेड ओएफसी आधारित एकाउस्टिक सेंसिंग प्रणालियां, सतर्कता नियंत्रण उपकरण (वीसीडी), फॉग पास डेवाइस, 52 किग्रा/60 किग्रा, 90 अथवा उच्‍चतर यूटीएस पटरियों और पूर्व-बलित कंक्रीट स्लीपर का प्रयोग, अल्ट्रासोनिक फ्लॉ डिटेक्शन (यूएसएफडी) हेतु व्‍ही कुलरडिजिटल किस्‍म की मशीनों का उपयोग, कंप्रेस्‍ड एयर पेट्रोल सहित प्री-हीटिंग तथा 3 पीस मोल्‍ड की स्‍व तौल पद्धति शुरू करके एल्‍युमिनो थर्मिट वैल्‍ड प्रौद्योगिकी को अपग्रेड किया गया है, ताकि वैल्डिंग की गुणवत्‍ता एवं विश्‍वसनीयता अपग्रेड की जा सके। दोषों को ढूंढने और अनुरक्षण की योजना तैयार करने के लिए रेलपथ संरचना की इलेक्‍ट्रोनिक निगरानी की जाती है। प्राथमिक रेलपथ नवीकरण करते समय गर्डर पुलों पर स्‍टील चैनल स्‍लीपरों का उपयोग किया जा रहा है। इसके अतिरिक्‍त, चुने गए मार्गों पर थिक वेब स्विचों, वेल्‍डेबल कास्‍ट मैंगनीज स्‍टील क्रॉसिंग बिछाने का निर्णय लिया गया है। लिंके हॉफमेन बुश (एलएचबी) सवारी डिब्बों, सवारी डिब्बा कारखाना (आईसीएफ) द्वारा निर्मित सवारी डिब्बों में सेंटर बफर कपलर का उपयोग, आदि का उत्तरोतर प्रयोग । रेल पटरियों को आयु-सह-स्थिति आधार पर रेलपथ नवीकरण कार्यों द्वारा बदला जाता है, जो एक सतत् प्रक्रिया है। अन्य उपायों में लोको पायलटों और संरक्षा कोटि के अन्य कर्मचारियों का प्रशिक्षण, उनके समुचित विश्राम तथा आवधिक रूप से चिकित्सा जांच आदि सहित काम करने की स्थितियों में सुधार लाना शामिल है। इसके अलावा, भारतीय रेल पर निरंतर निगरानी और संरक्षा पहलुओं में सुधार लाने के लिए रेलपथ की पेट्रोलिंग, फुटप्लेट निरीक्षण और विभिन्न स्तरों पर संरक्षा समीक्षाएं नियमित रूप से की जाती हैं।

\*\*\*\*